Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

AJANTA

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

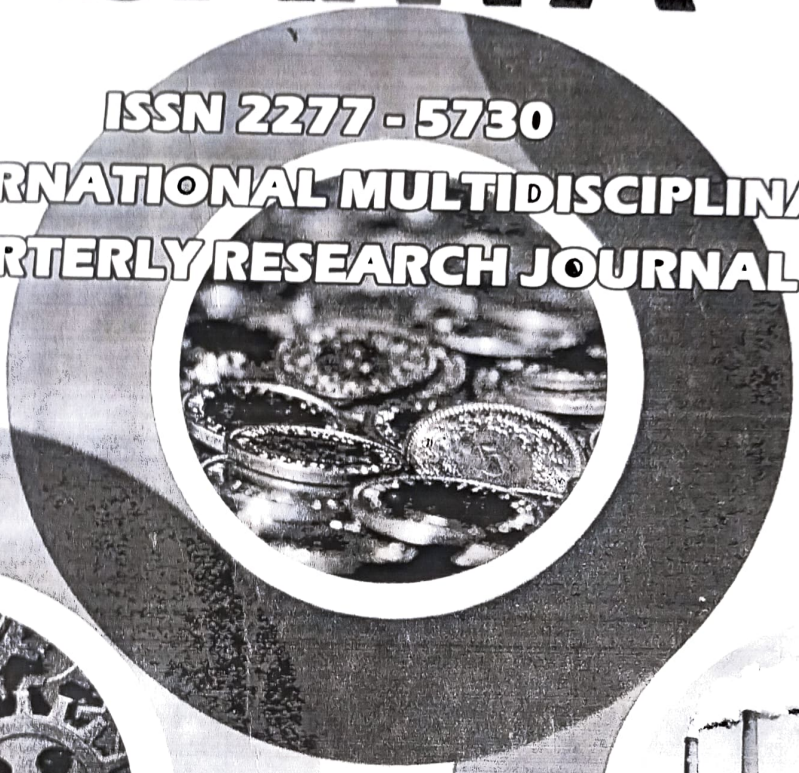

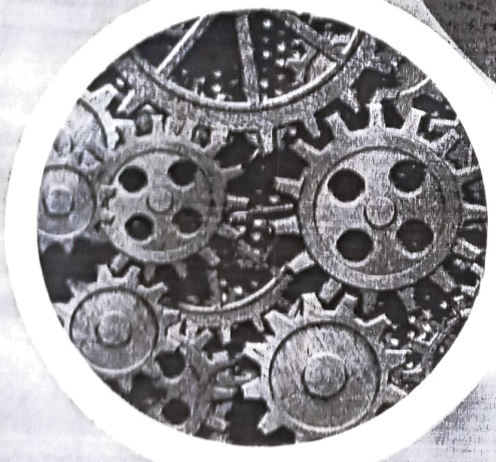

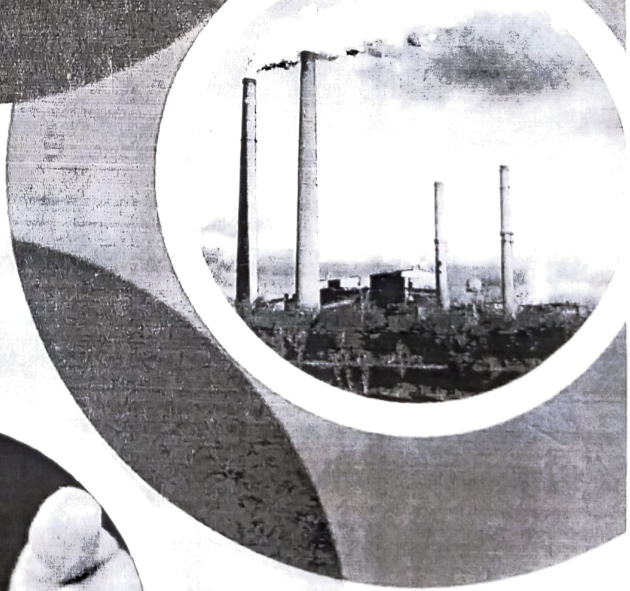

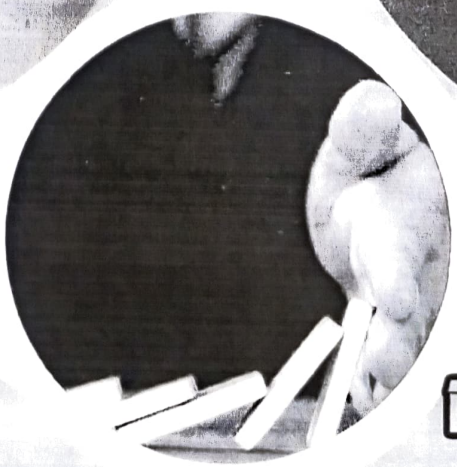

Volume-VIII, Issue-II
April - June - 2019
English Part - III / Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

८. डिजिटल इंडिया में दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा

डॉ. राम दास
शिक्षणशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

प्रस्तावना

हमारा भारत देश 1947 ई0 को आजाद हुआ, यदि हम स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात में शिक्षा का तुलनात्मक चिंतन करें तो हमें संभवतः कुछ संतोषजनक ऑकडे देखने को मिलते है। आज भारत की विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था चीन के बाद दूसरी सबसे बडी शिक्षा व्यवस्था है। जहॉ लगभग 10 लाख स्कूलों में 2025 लाख बच्चों को पढ़ाने का काम लगभग 55 लाख शिक्षक कर रहे है। 82 प्रतिशत रिहाइशी इलाकों में एक किलोमीटर की परिधि के अन्दर प्राथमिक और 75 प्रतिशत रिहाइशी इलाकों में तीन किलोमीटर की परिधि के अन्दर उच्च प्राथमिक विद्यालय है। माध्यमिक स्तर की परीक्षा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में कम से कम 50 प्रतिशत बच्चे परीक्षा में उत्तीर्ण होते है। इन सब उपलब्धियों के बावजूद आज लाखों की संख्या में विद्यार्थी शिक्षा की मुख्य धारा से वंचित हैं। इतनी प्रगति एवं उन्नति के बावजूद आज भी हमारे विद्यालय ऐसे बालकों के लिए साधनहीन नजर आते है जिनकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों, शारीरिक, बौद्धिक तथा सामाजिक एवं आर्थिक वजह के कारण कुछ विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताएँ है। इन्हीं के साथ कुछ ऐसे दिव्यांग बालक भी हैं जिनकी शिक्षा एवं मार्गदर्शन आज की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के लिए एक चुनौती हैं।

एक पाशविक प्रवृत्ति वाला बालक जब इस संसार में जन्म लेता है तो उसे अपने आस–पास के वातावरण से समायोजन स्थापित करने की आवश्यकता होती है लेकिन वह वातावरण से समायोजन तभी कर पाता है जब उसके परिवेश के लोग उसके साथ समुचित व्यवहार करते हैं। उनका यही व्यवहार उस बालक के जीवन की नींव का काम करता है। शिक्षा का भी यही उद्देश्य व कार्य होना चाहिए कि वह बालक की जन्मजात शक्तियों के अनुसार उसके सामने इस प्रकार का परिवेश बनाये जिससे बालक प्रोत्साहित हो और उसके व्यक्तित्व में निखार आ सके। आधुनिक युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग कहलाता है एक ऐसा युग जिसमें विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के अभाव में पॉव डिगानें की बात तो दूर, सॉस लेना भी दूभर है जिसने हमारी सामाजिक एवं सॉस्कृतिक परिस्थितियो को परिवर्तित एवं परिवर्धित कर दिया है। ऐसे समय तकनीकी ज्ञान का अभाव हमे कितना असहाय एवं दुर्बल बना देता है। कुछ विशेष परिस्थितियों में शायद प्रत्येक मनुष्य यह बात महसूस करता है। यह नवीन तकनीकी किसी विशेष क्षेत्र से सम्बंध न रखकर अपना पैर प्रत्येक क्षेत्र में पसारती नजर आ रही है। इस सम्बंध में डॉ0 ए0 एन0 **नम्बूदरी** ने कहा है कि " सूचना प्रौद्योगिकी वह तकनीकी है जिसमें कोई भी विषय, जानकारी जो ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी उपलब्ध है किसी भी समय किसी भी व्यक्ति द्वारा उपलब्ध करायी जाती है।" उपरोक्त कथन से यह संकेत मिलता है कि आज हम सूचना तकनीकी के ऐसे युग में प्रवेश कर गये है। जहॉ हर ज्ञान पूरी तरह से सीमाओं से मुक्त है। ज्ञान या सूचना आज एक आम इंसान की पहुॅच में है।